हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री की दशा

डॉ. दीपा अंटिन

प्रस्तावना:-भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैI नारी यह शब्द सुनने और लिखने में एक ही लगता है, किन्तु गौर करे तो वही नारी के कई रूप दिखने लगते हैंI वह माँ,बहन,बेटी,बहु,सास,दादी,नानी और भी कई किरदार निभाती हुई दिख पड़ती हैI वैसे देखा जाए तो वाही परिवार की नीवं हैIपरिवार,समाज,देश के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैI इसलिए तो कहा गया है"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,तत्र: देवताःI"

बीसवी सदी के अंतिम चरण तथा इक्कीसवी सदी के पूर्वार्ध में हम सभी का जीवन अनेक समस्याओं का शिकार बन चुका हैIएक सुन्दर और स्वस्थ जिन्दगी तो एक तरह से मोहताज़ बन चूका हैIविविध समस्याओं के साथ जुझना हमारी नियति बन चुकी हैI इसमें पुरूषों की अपेक्षा नारी ही अधिक शिकार बनी हुई हैI

पुरुष प्रधान देश में समय-समय पर संस्कृति के आड़ में नारी की शोषण ही करता रहा हैI बदलते समय के साथ-साथ परिवेश बदला,समय भी बदला नारी संवेदन और शोषण में भी परिवर्तन आ गयाI यही परिवर्तन साहित्य में दिखाई देने लगाI हिन्दी साहित्य एवं मनोविज्ञान का परस्पर संबंध है,साहित्य मानव मन का सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करता हैI मनोविज्ञान उपन्यासकार और कहानीकार का उद्देश्य चेतना के शुध्ह ,मौलिक तथा अनगड़े स्वरुप को उपस्थित करना होता हैIकिन्तु आज के मनोविज्ञानिक युग में असंतोष,असहिष्णुता एवं प्रचलित रूचि कहा जा रहा है-इस तरह के उपन्यासों और कहानियों में समस्याग्रस्थ व्यक्तित्व को प्रभावित करनेवाले पात्रों का सम्यक ज्ञान पा लेना ही नयी पीढ़ी के पाठकों की एक जटिल और अनिवार्य समस्या हैI हिन्दी के कई दिग्गज लेखकों जैसे प्रेमचंद,प्रसाद,जैनेन्द्र, उषा प्रियंवदा,मालती जोषी,कुसुम अंसल,तथा उषा अग्निहोत्री,महादेवी वर्मा,मन्नू भंडारीजी ने हिन्दी साहित्य के कहानी और उपन्यास साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैIमहादेवी वर्मा नारी महिमा को अपनी परिभाषा के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहती है,"नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं हैI आदिम काल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर,उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर,मानवी ने जिस व्यक्तित्व,चेतनाऔर ह्रदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी हैI" इस परिभाषा से स्पस्ट होता है की नारी जाती स्नेह और सौन्दर्य की साक्षात देवी है वह नर-पशु को मनुष्य बनाती है तथा अपनी वाणी से जीवन को अमृतमयी बनती है,उसके नेत्र में आनंद का दर्शन होता है वह संतप्त ह्रदय की शीतल छाया है,उसके हास्य में निराशा मिटाने वाली अपूर्व शक्ति हैI.इतना होकर भी पुरुष ने उसके साथ प्रेम का व्यवहार नहीं किया बल्कि उसको घुटन भरी जिन्दगी दे दियाI जिसको हम अनेक कहानी और उपन्यासों में देख सकते हैंI कृष्णा अग्निहोत्रीजी ने अपनी कहानी "एक भटकता मन" में एक ऐसी पत्नी का चित्रण किया है जिसके जीवन में पति प्रेम के आभाव ने ख़ामोशी भर दी है.वह है वर्षाI वर्षा के कितने भी बार समझाने से उसका पति उसको अधुरा ही छोड़ देता हैI प्यार के आभाव में उसका मन भटकता ही रहाIलेखिका ने यंहा वर्षा के भटकते मन का समाधान नहीं कियाI हो सके तो देवेन्द्र जो वर्षा से आकर्षित था उसके साथ विवाह कर सकती थी पर शायद अपने कटु अनुभवों ने उन्हें इसा करने नहीं दिया होगा I कुसुम अंसल के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान के नए आयाम रेखांकित हुए है,इसमें महानगर के मध्य- वर्गीय परिवारों में उत्पन युवतियों की कहानियां है जो अपनी जिन्दगी में कुछ करना चाहती हैI यह नारी उन्मुक्त जीना चाहती है,समाज और अपने परिवार से लडती है, टूटती है,और फिर आगे बढ़ती हैIयह नारियां जीवन की हर पढ़ाव पर समझौता करना चाहती हैI यौन वर्जनाओं के घेरे को स्वीकारने और नकारने की पीढ़ासे ग्रस्त हैIकुसुम अंसल की उपन्यास "उदास आंखे" की सुपर्ण जिसको अपने कॉलेज के लडको के नाम के साथ दीवारों पर उसका नाम कुछ लडको के द्वारा लिखा जाना,सुपर्णा के पोस्टर जगह जगह चिपकाना,वह जहां से भी गुजरती है वहाँ पर उसको ताने मारना,लडको के द्वारा करवाए जानेवाले कामों को चुपचाप करते जाना,इससे वह अन्दर ही अन्दर घुटनशील बनती चली जाती हैI

कुसुम अंसल की और एक कहानी "गवाह" में नायिका अपने ससुराल में घुतानशील का एहसास करती है,बीमार ससुर,और कमजोर सासकी सेवा और दफ्तर में बॉस की नज़र से बचती फिरती हैIपर जब मेमोरंडम दिया जाता है तब वह अपनी नौकरी बचने केलिए अपने बॉस के बताये होटल जाती है और पत्थर सी बनी वह सोचती है की यथार्थ हमेशा आदर्शवादी जीवन से अलग होता हैIस्पस्ट है की औरते अपने वैवाहिक जीवन में संघर्षशील होकर भी समाज की भूख बनकर पीड़ित समाज की सेवा में झटकर

संघर्षशील जीवन को आनंदमयी बनाने की कोशिश में लगी रहती हैIआज विवाह एक धार्मिक संस्कार न होकर एक समझौता मात्र रह गया हैIवर्तमान युग में विवाह संस्था टूटने की कगार पर हैIइसीलिए तो "रेखाकृति" उपन्यास में नैना मालविका से जीवन अनुथल विषाद करती हैIपरित्यक्ता नैना कहती है-"शादियाँ करतें हैं,लड़तें है,मार-पीटकरते है,बच्चे जनते हैं,और फिर अलग हो जातें हैं"इससे नारी की टूटनशीलाता में विभिन्न पहलूओं के दर्हन कराकर लेखिका ने अपनी प्रयोग धर्मिता का अच्छा परिचय हमें कर दियाI

कभी अपनी संतान केलिए,कभी गृहस्थी को बचने केलिय,कभी मर्यादा केलिए,कभी माता-पिता की ख़ुशी केलिए अपने स्वयं की सपनों की समाधी बना डालती हैI

उपसंहार:- हिन्दी कहानी और उपन्यास साहित्य में महिला कहानीकारों ने महिला की दुर्दशा का चित्रण बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किए हुए हैं,शोषित नारी,घुतानशीलता से भरी हुई नारी,नौकरीपेशा नारी,महानगरों में संघर्षमय जीवन बितानेवाली नारी,परिवार से अलग होकर या परिवार में ही रहकर तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाली नारी इन सभी के दुखो में कही न कही इनके परिवार वाले भी शामिल होतें हैंIए सभी नारी की सहायता करने के बदले में उसकी उपेक्ष ही करते हैIकुलमिलकर कहा जाए तो नारी सदियों से पुरूषों का वासना का शिकार बनती आ रही हैI आज आधुनिक युग में शिक्षा और कानून के प्रभाव से नारी सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कन्धा मिलकर चलती हुई तो नज़र आती है पर अभी भी वह कही न कही डरी-सहमी सी ही नज़र आती हैI

प्रकृति ने तो नर-नारी उनके ही विशेष गुणों से नवाज़ा है I बस, समाज की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता हैI सही में पाठको को भी इसके बारे एक बार सोचना अवश्य चाहिए की यह असमानता किस हद तक सही है?

****

संदर्भ ग्रंथ--नारी मनोविज्ञान